अध्याय : 6

समन्वित मूल्यांकन

अध्याय : 6

समन्वित मूल्यांकन

श्री विष्णु प्रभाकर हिन्दी के मानवतावादी लेखक हैं। उन्होंने गद्य साहित्य की सभी विधाओं में साहित्य का सृजन किया है। "आवारा मसीहा" उनकी चिन्तन परकता तथा मनविय अर्थवत्ता का उत्कृष्ट ग्रंथ है। श्री विष्णु प्रभाकर मुख्यतया नाटककार और एकांकीकार के रूप में विशेष ख्याति प्राप्त कर चुके हैं वे जितने आदर्शवादी उतने ही यथार्थवादी भी हैं। उनके सभी नाटकों में मनोविज्ञान की झाँकी झलकती है तथापि उनके तीन प्रमुख नाटक - "डॉक्टर", "टगर" और "बन्दिनी" पूरी तरह से मनोवैज्ञानिक नाटक हैं।

उनके मनोवैज्ञानिक नाटकों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट दिखायी देता है कि वे मनोविज्ञान के अच्छे पारखी हैं। विशेषतः नारी मनोविज्ञान के प्रति वे अत्यंत सजग नाटककार हैं।

मनोविज्ञान मानव के विविध मानसिक कार्य-व्यापारों का यथार्थ वर्णन करनेवाला एक महत्वपूर्ण विज्ञान है। मनोविज्ञान में मानव में निहित विभिन्न मनोविकारों, मनोविकृतियों, रक्षायुक्तियों, विकृत चरित्र तथा खण्डित व्यक्तित्व का चित्रण आदि का अध्ययन किया जाता है। विशेष बात यह है कि मानव मन की इन विविध अवस्थाओं का चित्रण श्री विष्णु प्रभाकर ने अपने मनोवैज्ञानिक नाटकों में विभिन्न मनोविकारों को चित्रित किया है ओर मानव मन की विशिष्टताएँ अभिव्यक्ति की है। इन मनोविकारों में उन्होंने माँ की ममता तथा वत्सलता को चित्रित करने के साथ ही साथ मानव में निहीत भय, क्रोध, ईर्ष्या, प्रतिशोध, हँसी आदि मनोविकारों को भी उद्‌घाटित किया है। पुरुष पात्रों की अपेक्षा नारी पात्रों में ही इन मनोविकारों को अधिक प्रश्रय मिला है इतना ही नहीं एक ही व्यक्ति में एक साथ अनेक मनोविकार प्रासंगिक उद्‌भूत होते हैं और उन विकारों को नाटकाकर ने बड़ी आत्मीयता से दर्शाया है। "डॉक्टर" नाटक की नायिका डॉ॰अनीला में अनेक मनोविकार दिखायी देते हैं जो उसके चरित्र और व्यक्तित्व की विशिष्टता है। साधारणतया पात्रों के

मनोविकारों को दर्शाते समय नाटककार का नारी विषयक उदात्त दृष्टिकोण प्रायः अधिक रहा है। मानव में निहीत विविध मनोविकारों को उद्घाटित करते हुए नाटककार ने अपने मानवतावादी दृष्टिकोण को भी अभिव्यक्त किया है।

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है कि वह साधारणतयः जगत् में सामान्य व्यवहार करता रहता है और प्रसंग के अनुसार विविध मनोविकार प्रकट करता है। फिर भी कभी कभी कुछ कारणवश वही व्यक्ति असामान्य (Abnormal) बर्ताव भी करता दिखायी देता है। श्री विष्णु प्रभाकर ने इस दृष्टि से मानव में निहीत कुछ मनोविकृतियों और रक्षायुक्तियों को भी अभिव्यंजित और अभिमंडित किया है। मनोविकृति मानव के असामान्य चरित्र का ही द्योतक है। विवेच्य नाटकों में "टगर", माथुर, "ठाकुर" टगर आदि ऐसे व्यक्ति हैं जो विविध मनोविकृतियों से पीडित हैं। चिन्ता मनःस्नायु-विकृति, मनोविदलता, उत्साह, विषाद, व्यामोह या संभ्रान्ति तथा प्रदर्शन प्रवृत्ति यहाँ नाटककार ने अपने विवेच्य नाटकों में पात्रों का ऐसा चरित्र चित्रण रेखांकित किया है कि जिसे देखकर पाठक मन में सोचते हैं कि इनकी विकृतियाँ कुछ हद तक प्रत्येक मानव की विकृतियाँ ही है।

श्री विष्णु प्रभाकर मनोविज्ञान के एक सच्चे अभ्यासक है जिसकी वजह से उन्होंने अपने नाटकों में कुछ पात्रों के मनोविकारों और विकृतियों के साथ मनोरचनाओं या रक्षायुक्तियों को भी अंकित किया है। यह रक्षायुक्तियाँ मानव को ठिकाने पर लाने का कार्य करते हैं। विकृतियों से पाने के लिए ही मानव में रक्षायुक्तियाँ निर्माण होती हैं। इसमें संदेह नहीं कि विष्णु प्रभाकर ने अपने विवेच्य नाटकों में मनोविकृतियों के साथ ही साथ रक्षायुक्तियों पर अधिक बल दिया है। मनोविकृतियों से पीडित पात्रों में कभी-कभी विकृतियाँ अपनी चरमसीमा तक पहुँचती है लेकिन नाटककार ने अत्यंत संयम से नारी और पुरुष पात्रों का चरित्र-चित्रण किया है।

श्री विष्णु प्रभाकर के विवेच्य नाटक रंगमंच के दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं क्या "डॉक्टर", क्या "टगर" क्या "बन्दिनी" सभी नाटक रंगमंच की दृष्टि से सफल है। विष्णु प्रभाकर के नाटकों की शिल्प के दृष्टि से भी उपलब्धि है। उनके प्रसिध्द मनोवैज्ञानिक नाटक "डॉक्टर" में मनोवैज्ञानिक शब्दावली का व्यापक प्रयोग हुआ है जो समीचीन है। विवेच्य नाटकों में पूर्वदीप्ति तथा पत्रात्मक शैली का

सार्थक प्रयोग नाटककार के प्रतिभा का द्योतक है। नाटक की संवाद योजना निःसंदेह पात्रों के विविध मनोभावों मनोविकृतियों को दिखाने में सक्षम है। नाटककार ने कुछ पात्रों के विकृत चरित्र पर भी अच्छा प्रकाश डाला है। "ठाकुर" और "माथुर" टगर इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं। विकृत चरित्र के साथ ही साथ पात्रों के खण्डित व्यक्तित्व का अंकन करते हुए आज के टूटे हुए मानव को ही चित्रित किया गया है। खण्डित व्यक्तित्व अंकन आधुनिक नाटकों की शिल्पगत विशेषता है।

रंगमंच के परिप्रेक्ष्य में नाटककार के तीनों मनोवैज्ञानिक नाटक अत्यंत सफल बन पड़े है। साधारणतयः प्रत्येक नाटक में एक प्रमुख दृश्य बांध रहा है और उसी पर आधारित दृश्यबंध पर नाटक पात्रों के क्रिया-व्यापारों में अभिनय सफल बन पडे हैं। उनके विवेच्य नाटकों में पात्रों की वेशभूषा, उनके क्रिया-व्यापार, उनके स्वभाव, उनकी मनोभूमि, आयु और व्यवसाय के अनुसार दर्शायी गयी है।

"डॉक्टर" नाटक में डॉक्टर का व्यवसाय करनेवाली डॉ·अनीला अत्यंत महत्वपूर्ण नारी पात्र है जिसका अभिनय रंगमंच पर अपना विशेष प्रभाव दर्शकों पर छोड देने में सक्षम है। एक कुशल अभिनेत्री ही डॉक्टर अनीला का अभिनय कर सकती है। "टगर" नाटक की टगर का स्वच्छन्दी प्रेमभाव ठाकुर और माथुर का मनोविकृत चरित्र रंगमंच पर अपनी अमीट छाप छोड़ देता है। इतना ही नहीं श्री विष्णु प्रभाकर का तीसरा मनोवैज्ञानिक नाटक "बन्दिनी" है। इसमें उमा की मनःस्थिति को नाटककार ने अत्यन्त सूक्ष्म रूप से अंकित किया है। उमा के अनु के प्रति प्रेम, पति-पत्नी प्रेम और देवी के रूप में उसकी की गयी प्रतिस्थापना रंगमंच पर दर्शकों को भावविभोर कर देती है विशेषतः नाटक के अंत में उमा की खुदकुशी अत्यंत मर्मान्तक है जहाँ डॉक्टर नाटक में डॉ·अनीला की प्रतिशोध की भावना डॉक्टर के कर्तव्य के रूप में परिणत होकर दर्शकों को आनंद विभोर कर देती है। वहाँ उमा की खुदकुशी दर्शकों के आँखों में आँसू ला देती है। इसप्रकार नाटककार ने सुख और दुख दोनों ही अनुभूतियों को नाटक में अंकित किया है औरा रंगमंच पर उसे मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है जो नाटककार की भावयत्री तथा

कारयत्री प्रतिभा का मणिकांचन योग है। इसमें संदेह नहीं कि श्री विष्णु प्रभाकर एक अत्यन्त कुशल और मनोवैज्ञानिक नाटककार है। उनके विवेच्य नाटक मनोविज्ञान कि कसौटी पर खरे उतरते हैं और नाटककार का नाम रौशन करते हैं तथा हिन्दी के मनोवैज्ञानिक नाटकों की श्री वृध्दि करते हैं।